सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - श्यामा श्याम

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

चंद्र जागा है ऐसे अंधकार से

हर किरण उजाला प्रसराय

चंद्र उगा है ऐसे झगमग से

हर आभा शीतलता बहाय

चंद्र उठा है ऐसे अंग से

हर तरंग मृदुता जगाय

चंद्र खिला है ऐसे ओवारों से

हर पुँज अमृत लहराय

चंद्र चलता है ऐसे स्पंदन से

हर स्पर्श आनंद प्रकटाय

चंद्र सृजनता है ऐसे बिखरों से

हर तेज चांदनी उभराय

चंद्र चूमता है ऐसे चुभन से

हर तीर कोमलता पथराय

चंद्र बरसता है ऐसे बूँद से

हर भीगता आँचल सोहाय

चंद्र मचलता है ऐसे नजारों से

हर अदा नृत्य नचाय

चंद्र चमकता है ऐसे माधुर्य से

हर तीव्रता प्रीत बंधाय

"Vibrant Pushti"

छुपोगे भँवर में तो छुपने न देंगे

ओह्ह श्री कृष्ण!

अरे तु सागर है तो मैं भी एक बूँद हूँ

अरे तु खेवैया है तो मैं भी एक तिनका हूँ

चलेगी नैया हम दोनों की प्रीत रवैया

बनाएंगे हम जीवन एक दिन किनारा

हो कर रहेगा हमारा मिलन

"Vibrant Pushti"

"श्याम" **कौन है श्याम?**

"श्याम" **कौन नही है श्याम?**

"श्याम" **जो नही है श्याम वह कोई नही है**

"श्याम" **जो नही है श्याम वह कुछ नही है**

"श्याम" **श्याम से ही है सबकुछ**

"श्याम" **श्याम से ही है सर्वकुल**

"श्याम" **श्याम से तु है**

"श्याम" **श्याम से मैं है**

"श्याम" **श्याम से हम है**

"श्याम" **श्याम से हर है**

"श्याम" **श्याम से प्रहर है**

"श्याम" **श्याम से दुपेर है**

"श्याम" **श्याम से शाम है**

"श्याम" **श्याम से निशा है**

"श्याम" **श्याम से दिशा है**

"श्याम" **श्याम से कर्म है**

"श्याम" **श्याम से मर्म है**

"श्याम" **श्याम से कर्म है**

"श्याम" **श्याम से गति है**

"श्याम" **श्याम से मति है**

"श्याम" **श्याम से ज्योति है**

"श्याम" **श्याम से मूल है**

"श्याम" **श्याम से कुल है**

"श्याम" **श्याम से विरल है**

"श्याम" **श्याम से विपुल है**

"श्याम" **श्याम से पहल है**

"श्याम" **श्याम से चहल है**

"श्याम" **श्याम से तरल है**

"श्याम" **श्याम से अर्थ है**

"श्याम" **श्याम से पदार्थ है**

"श्याम" **श्याम से निस्वार्थ है**

"श्याम" **श्याम से श्वास है**

"श्याम" **श्याम से विश्वास है**

"श्याम" **श्याम से सुहास है**

"श्याम" **श्याम से प्यास है**

"श्याम" **श्याम से गीत है**

"श्याम" **श्याम से रीत है**

"श्याम" **श्याम से मीत है**

"श्याम" **श्याम से प्रीत है**

"Vibrant Pushti"

यमुना की धारा अमृत है

गिरिराज की शिला कोमल है

व्रज की रज तीव्र स्पंदन है

कैसा पान किया जो तुम्हारी रुधिर धारा पुष्टि के लिए तड़पती है

कैसी दूग्ध धारा अभिषेक की जो तुम्हारी धड़कन लोहा रहती है

कैसी परिक्रमा की जो तुम्हारी प्रीत में कठिनाई जागती है

"Vibrant Pushti"

हे प्रिये प्राणेश्वरी !

हम जमना के तीर भरत जल

हमरो घट न भराई

ऐसो घट क्यों तुमने दियो

जाको तुम बिन को न सगाई?

"Vibrant Pushti"

घट घट में है श्याम

घट घट में है राम

घट घट में है राधा

घट घट में है सीता

तुने मेरा ऐसा घट भरत जिसमें श्याम श्याम श्याम - जिसमें राम राम राम

हे श्री वल्लभ !

ये नैन - कुछ तो है

ये मन - कुछ तो है

ये तन - कुछ तो है

ये साँस - कुछ तो है

ये आत्म ज्योति - कुछ तो है

हाँ! यही में प्रीत उपासना हो जाये तो

"Vibrant Pushti"

हे प्रिये ! हे प्रियतम !

तुम ही तुम हो

लहर लहर सरर सररर

श्री यमुनाजी मधुर मधुर

साँस को सहाये नैन में समाये

मधुर मधुर से अंग में ठहराये

पुलकित पुलकित मन नचाये

अधर अधर से पुष्टि प्रकटाये

ठहर ठहर से धड़कन रुकाये

प्रियतम आत्म को प्रीत स्पर्शाये

ऐसी निराली रीत जगाये

न एक दूजे से दूर कराये

साँवरे साँवरी की लीला न्यारी

चतुर्थप्रिया का सौभाग्य सोहायी

"Vibrant Pushti"

अपने प्रीत के धागों से

अपने चितवन चित तिरछ से

अपने अंतर अंग तरंग से

अपने तन मन संग रंग से

अपने आत्म प्रीत पुष्टि से

अपने जन्म जन्म ब्रह्मसंबंध से

ऐसे बंधे

ऐसे बांधे

ऐसे एकात्म

जैसे राधा श्याम

" Vibrant Pushti "

हर बूँद में रीत भरी है

बूँद बूँद परिवर्तिता है

जिसको छुये बूँद का है

जिसको पीये बूँद का है

बूँद से पहचाना बूँद होना

बूँद से बूँद एक धारा होना

जैसे वसुंधरा का सागर

जैसे मन जीवन की माँ

क्षण क्षण संस्कृत

घड़ी घड़ी अमृत

बूँद बूँद प्रीतामृत

ओ! मेरे परम प्रिये परमात्मा!

तु हर रीत से है मेरा प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

सखा सखी सखी सखा

रिश्ता निराला

जो मिले तो खेल निराला

जो न मिले तो विरह निराला

न दूजे को एक से चले

न एक को दूजे से चले

उनका तन एक

उनका मन एक

हर रीत में समर्पण अनेक

हर लीला में आनंद अनेक

कोई एक से रूठे

हर कोई अनेक से रूठे

कोई अनेक से रूठे

हर एक हर एक से रूठे

ढूंढे चित अपरंपार

टूटे पल वारंवार

न चैन अति दूर में

बहुत बैचैन अति विरह में

कब मिले कब मिले

मन व्याकुल तन आकुल

प्रीत की हर साँस नही बिलकुल

हर एक कि ....

"Vibrant Pushti"

प्रीत की हर रज पवित्र है

प्रीत की हर धारा विशुद्ध है

प्रीत की हर किरण अग्नि है

प्रीत की हर तरंग अमिश्रित है

प्रीत की हर गूँज अखंड है

प्रीत का हर रंग श्याम है

प्रीत के हर अंश आनंद है

प्रीत का हर विचार एकात्म है

प्रीत का हर स्पर्श पुष्टि है

क्या कहे

प्रीत का हर ख्याल प्रियतम है

"Vibrant Pushti"

हे मेघ श्याम! हे शाम श्याम!

हे घेसू श्याम! हे अमासे श्याम!

हे विरह श्याम! हे तरस श्याम!

हे आह श्याम! हे बाष्प श्याम!

हे आंतर ऊर्जा श्याम!

हे बाह्य ताप श्याम!

हे प्रीत श्याम!

श्याम श्याम सर्व से श्याम!

हे मेरे श्याम! मेरे घनश्याम!

"Vibrant Pushti"

श्याम रंग से तन रंगाया

श्याम से गौर समाने

श्याम अंग से आसमाँ सजाया

श्याम से सूरज उगाने

श्याम तरंग से सागर लहराया

श्याम से घनघोर बरसाने

श्याम उमंग से अनिल उड़ाया

श्याम से भँवर गुनगुनाने

श्याम आँचल से धरती रक्षाया

श्याम से प्रकृति खिलने

श्याम संग से प्रीतरस पिलाया

श्याम से आत्म जुड़ने

श्याम श्याम से प्रियतम प्रकटाया

श्याम श्यामा श्यामा श्याम होने

ऐसी निराली प्रीत वर्धनी

जैसे श्री राधा यमुना पुष्टि सर्जनी

"Vibrant Pushti"

"राधा" को गोपि भाव

"कृष्ण" को रसो वैः सः कहते है।

क्या है यह माधुर्य भाव और शरणागत भाव?

श्री राधा! **"राधा" "राधा"**

श्री कृष्ण! **"कृष्णा" "कृष्णा"**

क्या है यह "राधा"

क्या है यह "कृष्ण"

डूबना है तो राधा के नयन में

खोना है तो कृष्ण के रंग में

हे राधा!

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

मन की झँखनाओ का झुलन बनवाऊं

तन की तमन्नाओ का तोरण बंधवाऊं

मेरा श्याम हिंडोले झूले

मेरा कान्ह झुलनिये झूले

टुहुक टुहुक तरुवर गाजे

ढुरर ढुरर बदलियाँ गरजे

धरती गाये मल्हार

रिमझिम रिमझिम अमी बूँद बरसे

मन की वडवाई अंबर को चूमे

तन की तरुणाई तरंगों से झूमे

मेरा घनश्याम हिंडोले झूले

मेरा गोविंद झुलनिये झूले

गुलमहोर निकुंज सजाये

जुईमोगरा अंग भराये

वनस्पति बिखरे हरियाल

झुनुन झुनुन झरना धार बरसाय

टिमटिम तारलियाँ रंग उड़ाय

नाचे मयूर गाये दादुर

मेरा साँवरिया हिंडोले झूले

मेरा गोवर्धन झुलनिये झूले

"Vibrant Pushti"

बादलों को टकराके नैनों में **ज्योत जाग उठी**

तेरे मुखड़े की अदा पर हलकी सी **लहर दौड़ उठी**

झुल्फ़े लहराने लगी, **पलके फ़रफराने लगी**

तेरे होठों से **पुकार उठने लगी**

साँसों की कसम

धड़कन की कसम

टपक टपक बूँद गिरते तन मन में **आग सुलग उठी**

तेरे आँचल की उड़ान से रोम रोम **प्यास तड़प उठी**

मेरी प्रीत गा उठी

लज्जा की कसम

छुआ छुये की कसम

"Vibrant Pushti"

यमुना की खल खल धारा - आसमान के टीम टीम करते सितारें कोई संकेत करते थे - कुछ होने वाला है।

वायु मधुर बहे रहा था और पेड़ के पत्तो से आसपास की धरा को जगा कर कहे रहा था, कुछ होने वाला है तो आप सर्वे अपने आप को कुशल रखना कोई तुम्हारी पास आ रहा है।

इतने में पंखी का कलरव शोर करने लगा, उन्होंने कोई ऐसी तरंग सुनी जो तरंग में किसीका इंतेज़ार था।

धीरे धीरे वह तरंग छम छम के झंकार में परिवर्तन हो गयी, वही धरा और वही यमुना निकुंज के पास आ कर वह झंकार ठहर गयी।

आसपास नीरव शांति थी, यमुना का जल उछल उछल कर वो धरा की ओर लहराने लगे, शायद वह छम छम सूर जगाने वाले के चरण स्पर्श करलूँ।

वह पेड़ भी अपनी शाखाये झुका झुका कर अपने आप को इतना नीचा करने लगे कि शायद वो छम छम वाले के आंचल को छू लू।

दोनों की बात न बनी क्यूँकी छम छम के सूर जो जगाते थे वह एक ऐसी निकुंज के कोने में छुप गया कि न किसीकी नजर पड़े या न कोई आहट जाग जाये।

समय भी अपने आप को भूल गया जैसे वह वायु, वह यमुना की धारा, वह निकुंज की धरा, टीम टिमटिमाते सितारें और जो आया था वह भी।

पर जाग रहा था वह पेड़ जो निकुंज से जुड़ा था, उन्होंने अपनी नजर दूर दूर तक फिरायी पर कोई नजर न आया, वह सोचने लगा - इतनी रात को यह छम छम के सूर ऐसे नही बजते? कुछ तो होगा ही!

इसी सोचमें अपने आप को खो रहा था इतने में - कोई पुकार सुनी......

पेड़ चमक गया, और जो दिशा से आवाज आयी थी वो ही दिशा तरफ अपनी नजर सतेज करदी। इतने में फिरसे वह पुकार उठी - रा.......

पेड़ अपने पत्ते की हलचल से सही सुन न पाया पर इतना समझ पाया कि कोई आ रहा है और वह यह छम छम के जो सूर जगाये थे उन्हें ढूंढते ढूंढते ही यहाँ आयेगा।

यहाँ जो छम छम के सूर उठे थे उन्होंने यह पुकार सुनली और वह वोही पुकार की तरफ अपने कदम बढ़ाने लगे - यह बढ़ते और दौड़ते हर कदम ने छम छम के सूर को सरगम कर दिया और झंकार - छम छम छम छम की गूँज में परिवर्तन हो गया।

यमुना धारा भी समझ गयी, वायु भी समझ गया, पत्ते भी समझ गये, धरा भी समझ गयी, टिमटिमाते सितारें भी समझ गए और समय भी समझ गया कि यह कौन है?

यमुना का जल आकुल व्याकुल होने लगा, टिमटिमाते सितारें आसमान में जोर जोर से घूमने लगे, वायु अपने आपको झंझावात में परिवर्तन करने लगे और पत्ते अपने आपको शाखासे तूट तूट कर बिखरने लगे, धरा अपनी हर रज तीतर बितर करने लगी इतने में वह पुकार जो पेड़ ने अधुरप सी सुनी थी वह उनके बिलकुल निकट आ गयी और सबने सुनी - राधा!

ओहह! सर्वे थंभ गये, स्थिर हो गये! यमुना अपनी आकुल व्याकुलता छोड़ दी, टिमटिमाते सितारें रुक गए, वायु शांत हो गया, पत्ते नवचेतन होने लगे, धरा एक मेकमें घुल गयी और पेड़ सहसा हो गया।

सर्वत्र शांत हो गया, सब अपने धैर्य में छुप गये और इंतज़ार करने लगे कोई आत्मीय धन्यता और स्पर्शता का, इतने में वह पुकार की गूँज सुनायी "राधा" "राधा" ???

और वह छम्म छम्म के सूर एक दूजे के निकट आने के लिए अपनी हर आंतरिक और बाह्यी तीव्रता को उत्तेजित करते हुए दौड़ रहे थे।

छम्म छम्म के सूर रुक गए, पर वो पुकार का आंतर नाद आ रहा था, शायद छम्म छम्म ने सोचा होगा की देखु तो सही वो पुकार कितने रीति से द्रवित होगा, छम्म छम्म की अठखेलिया की मधुरप दोनों को कितनी गहराई से बांधते है?

"Vibrant Pushti"

श्याम श्याम संग ऐसी जुड़ी

उजली श्याम रंग हो भयी

श्याम श्याम रंग ऐसी रंगी

मन श्याम श्याम सूर गा ने लगी

श्याम श्याम सूर गा ने लगी

तन श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी

श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी

धन श्याम श्याम अर्चन करने लगी

श्याम श्याम अर्चन करने लगी

जीवन श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी

श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी

पुष्टि प्रीत श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी

श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी

आत्म श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी

श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी

श्याम श्याम से एकात्म भयी

श्याम श्याम से श्यामा हो गई

श्यामा श्यामा से श्याम हो गई

यही रीत है श्याम प्रीत की

यही सृष्टि है श्याम पुष्टि की

"Vibrant Pushti"

जुगनी रात

टिमटिमाती रात

दीपक रात

उर्जित रात

उजली रात

जागती रात

भड़कती रात

जलती रात

विरह रात

अँसुवन रात

जपती रात

खोजती रात

उठती रात

ढूँढती रात

आह रात

पुकारती रात

ओझल रात

तृष्णा रात

अपलक रात

इंतेज़ार रात

कैसी कैसी रात

भिन्न भिन्न रात

भक्त - प्रियतम - ज्ञानी - तपस्वी - सिद्ध - अभद्र - अमानवीय - आत्मीय

ऐसी है रात

ऐसी है फरियाद

जो समझे उन्हें ही स्पर्शे

स्पर्शते स्पर्शते लूट जाती है राते

तरसते तरसते बह जाती है राते

"Vibrant Pushti"
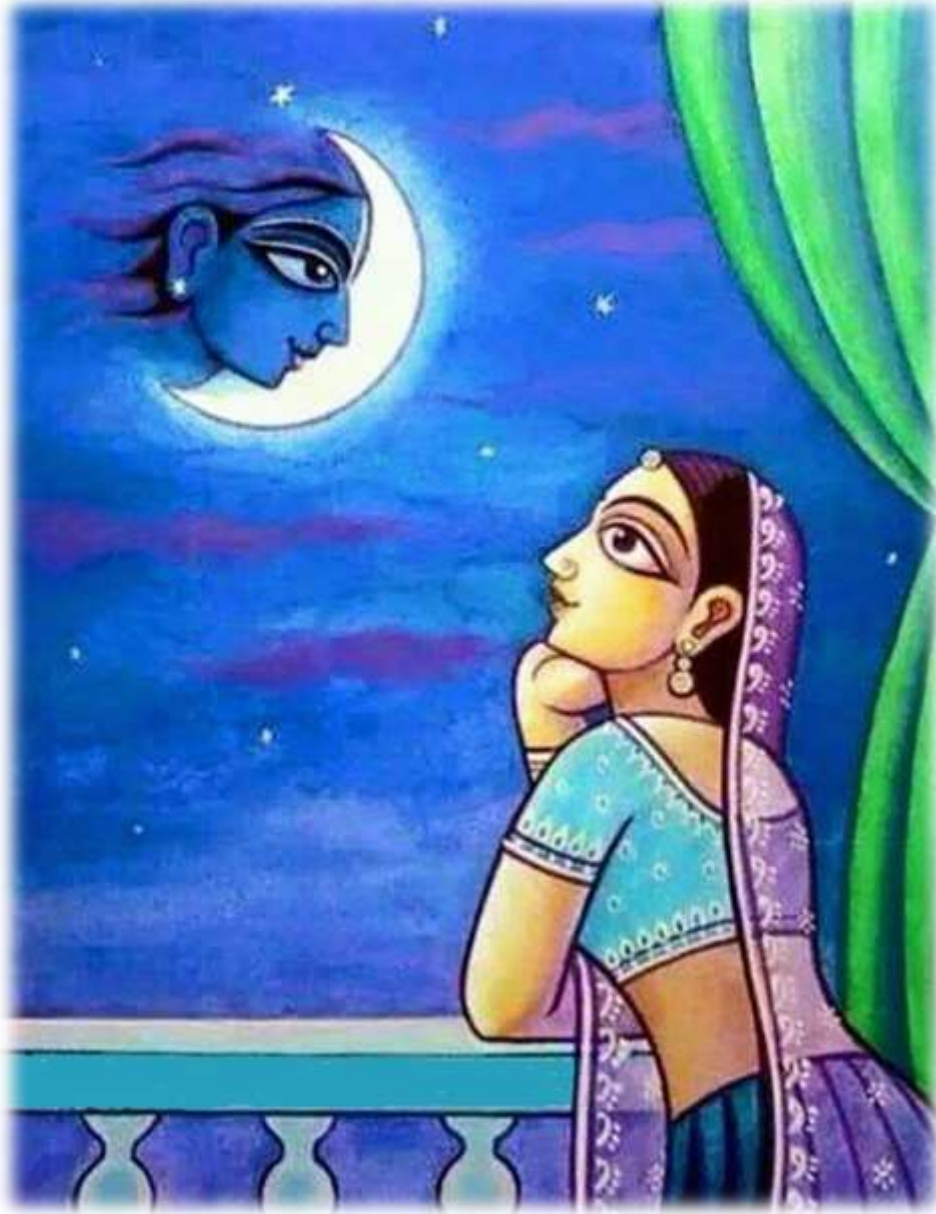
कभी देखा है

अपने पलकों में क्या छिपा है

अपने नयनों में क्या छिपा है

अपने साँस उच्छवास में क्या छिपा है

अपने अधरों में क्या छिपा है

अपने मुखड़े में क्या छिपा है

अपने झुल्फों की मांग में क्या छिपा है

अपने माथे की पघडी में क्या छिपा है

अपने भाल के तिलक में क्या छिपा है

अपने कर्णो के झुमखे में क्या छिपा है

अपने उंगली के अंगूठी में क्या छिपा है

अपने बाहों के बाजुबंध में क्या छिपा है

अपने हाथों के कंगना में क्या छिपा है

अपने पाँवो की पायल में क्या छिपा है

अपने तन के आँचल में क्या छिपा है

अपने मन के तरंग में क्या छिपा है

अपने धन के विश्वास में क्या छिपा है

अपने कर्म के पुरुषार्थ में क्या छिपा है

अपने धर्म की संस्कृति में क्या छिपा है

अपने जीवन के कर्म में क्या छिपा है

अपने जन्म के सत्य में क्या छिपा है

"Vibrant Pushti"

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ देते जाते है

कुछ कहते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ स्पर्शाते जाते है

कुछ धड़काते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ भिगोते जाते है

कुछ जगाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ बहाते जाते है

कुछ चमकाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ थरथराते जाते है

कुछ ठंड़ठंड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ नचाते जाते है

कुछ गिराते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ झुलाते जाते है

कुछ हिलाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ जीतते जाते है

कुछ हारते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ खोते जाते है

कुछ पाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ पिलाते जाते है

कुछ तरसाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ मिलाते जाते है

कुछ बिछड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ   जाते है

कुछ   जाते है

"Vibrant Pushti"

यमुना सा मोहन

व्रज रज सी राधा

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

यमुना बसी वहाँ वृंदावन बसा

इसीलिए तो

कहते है

गोकुल बरसाना राधा कान्हा

नंदगाँव मथुरा श्याम श्यामा

यही रीत है प्रीत आत्म की

जो जन्म जन्म जिये हर ब्रह्मांड की

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

अर्थात तुमने इतना स्मरण करवाता हूँ कि श्री गोवर्धन की रचना श्री प्रभु ने श्री राधा के कहने से रची थी

पता नही ये सब अक्षर और शब्द कैसे जुड़ जाते है

जब तक जी रहा हूँ

तेरा इंतज़ार करता हूँ

कभी तु छुपता है

बादलों जंगलों में

कभी मैं ढूंढता हूँ

कहीं गलियाँ झोपड़ियों में

कभी तु छुपता है

कजरारे नैनों में

कभी मैं खोजता

आसमान के तारों में

कभी तु छुपता है

सागर की गहराई में

कभी मैं तराशता

उच्छवास की आह में

कभी तु छुपता

कहियों के आँचल में

कभी मैं ढूंढता

अपलक न झुकते नैनों में

"Vibrant Pushti"

एक श्याम हो बहोत श्याम

कैसी लीला तुने रचाई

श्याम श्याम से बिछड़े राम

श्याम श्याम से भूले श्याम

न कोई राम रहे न कोई श्याम

घडते घटते हुए दुर्योधन

टूटते छूटते हुए दुशासन

अंधकार अहंकार से रावण भये

अज्ञान अभद्र से कंस भये

श्याम श्याम से श्यामहीन हो गए

राम राम से स्वार्थजन हो गए

कैसी लीला कैसी घटमाल

श्याम के संसार में प्रीत असंस्कृत

राम के संसार मे संस्कार अस्पृश्य

आओ राम आओ घनश्याम

जगाओ कण कण में राम

प्रकटाओ बूँद बूँद में श्याम

खुद को जगाकर सर्वत्र हो जाये राम

खुद को उत्कृष्टता कर सर्व हो जाये श्याम

यही ही तो रीत है

एक ही श्याम भये बहोत श्याम

एक ही राम भये अनेक घनश्याम

"Vibrant Pushti"

मन से मोहन
तन से त्रेत्रयं

धन से धनंजय

नयन से नयनाभिराम

कर्ण से करुणाधार

नासिका से नरसिंह

अधर से अच्युत

मुख से मुखारविंद

मुखडा से माधव

ऐसो है मेरो श्याम

जो मोहे हर मुखड़े के तीर से तारे

जो मोहे हर मुखड़े के भाव से भावे

जो मोहे हर मुखड़े के इशारे से इशे

यही है मेरा सुंदिर श्याम!

"Vibrant Pushti"

ये एक ऐसा एहसास है

ये एक ऐसा विश्वास है

ये एक ऐसा आत्मीय गूँज है

ये एक ऐसा विरह दर्द है

ये एक ऐसा इंतेज़ार है

ये एक ऐसा अनुभव है

ये एक ऐसी पूजा है

ये एक ऐसी साधना है

ये एक ऐसी आंतरिक तरंग है

ये एक ऐसा श्रृंगार है

ये एक ऐसा धड़कने चुभन है

ये ऐसी साँसों की धारा है

ये ऐसा आत्मीय सर्जन है

ये ऐसा मधुर प्राकट्य है

"Vibrant Pushti"

झुलन झूले होले होले प्रियतम

मन मोरा झुलाये तन मोरा झुलाये

झुलाये मोरे अंतरंग तरंगे

झुलन झूले होले होले प्रियतम

"Vibrant Pushti"

तुम्हें पढ़ता हूँ

तो तेरी याद सताती है

तुम्हें याद करता हूँ

तो तेरा भाव पुकारता है

तुम्हें पुकारता हूँ

तो तु कहीं दूर चली जाती है

कैसी है यह रीत राधिके

प्रीत करें तो कैसी करें?

"Vibrant Pushti"

साँस भी कभी अपनी गहराइयों थामता है

अधर भी कभी अपनी चिपचिपायी मौन धरता है

नैन भी कभी अपनी पलके झुकी झुकी बरसाता है

धड़कन भी कभी अपनी मर्यादा संकोचता है

मन भी कभी अपनी उड़ान रुंधता है

तन भी कभी अपनी उतेजना दर्दता है

क्या यही ही प्रीत की विरहता है?

कुछ होता है।

"Vibrant Pushti"

प्रेम - परमात्मा - सर्वात्मा

प्यासे की प्यास बढ़ाओ

विरह की रीत जतावो

तुम्हारे है तो तुमसे ही सीखेंगे

नही हमें आता आजमाना

क्यूँकी हम तेरे दीवाने है

"Vibrant Pushti"

क्या है प्यार

कभी साँस थम जाती है

कभी स्वर रुक जाते है

कभी धड़कन जोर करती है

कभी दिल दबता जाता है

कभी मन खो जाता है

कभी तन बरसता है

नयनों से आवाज उठती है

कर्णो से आहटे थप थपाती है

ओहह!

"Vibrant Pushti"

ये कैसा ख्याल है

जो न मन को गंवारा नही

जो न नैन को गंवारा नही

जो न धड़कन को गंवारा नही

जो न साँस को गंवारा नही

जो न दिल को गंवारा नही

जो न प्रीत को गंवारा नही

है यह आत्मीय पुष्टि प्रीत का थोड़ा स्पर्श

जो तूट न जायें वह गंवारा है मुझे

यही तो है मेरे जन्मों जन्म की प्रीत

जो छूट न जाये वह गंवारा है मुझे

न करों जुल्म इतना कि न मैं रहूँ या न रहे मेरी प्रीत

नही तो न कोई किसीको राधा समझेगा न कोई किसीको कृष्ण

हे मेरा जीवन!

"Vibrant Pushti"

प्रीत का हर दर्द मधुर है

प्रीत की हर अदा दिले जिगर है

जिसका हर खेल प्रीत लीला है

जिसकी हर रीत प्रीत कुरबानी है

"Vibrant Pushti"

नीले आकाश में

श्याम रंग बादल भरे

सुनहरी किरण खिली

जो मेरे मन को कुछ कहने लगी

जो मेरे तन को कुछ छूने लगी

कहती है ऐसा

मन खिलने लगा ऐसा

छूती है ऐसा

तन मचलने लगा ऐसा

सुरीले सूर से कहा

हे मेरे सृजन! तु ही है मेरा श्रेष्ठतम

तु जागा तो सृष्टि जागी

तु खिला तो प्रकृति खिली

तु ही मेरा संरक्षक

तु ही मेरा धर्मधरण

मधुर स्पर्श से छूआ

हे मेरे पुरुषं! तु ही मेरा गतिर्मम

तु उठा तो जग उठा

तु संवारा तो संसार संवर्धना

तु ही मेरा वहन दाता

तु ही मेरा कर्म नियंता

हे मनुष्य! तु ही है मेरी जीवन धन्यता

हे मनुष्य! तु ही है मेरा प्राणं सार्थकता

"Vibrant Pushti"

ओ मेरे परम प्रिय! प्रियतम!

राधा! श्यामा! गोपि! चतुर्थ प्रिया यमुना! मधुरा पुष्टि!

मेरे साँसों से उत्सती

मेरे नाद से स्फूर्ति

मेरे नैन से दमकती

मेरे विचार से सरस्वती

मेरे कर्म से संवरती

मेरे आनंद से संस्कृति

मेरे आत्म से प्रज्वलती

हे परम प्रीत!

तु ही है मेरा -

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय"

"Vibrant Pushti"

हे आकाश

हे धरती

ढूंढता हूँ जिसे तुमने छुपाया कहीं

तेरे सितारें टम टमा कर कहे रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

तेरे पौधें खील खील कर जता रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब सितारें सूरज हो जायेगा

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब पौधा वृक्ष हो जायेगा

तब तो तु किरण बन कर मेरे साँसों में बस जाएगी

तब तो तु फूल हो कर मेरे आँचल पर छा जाओगी

तब मैं मैं न रहूँगा तु तु न रहेगी

मैं श्याम हो जाऊँगा तु श्यामा हो जाओगी

यही है हमारी जन्म की रीत

"Vibrant Pushti"

कैसा हूँ मैं?

नजर उठाता हूँ **श्याम नजर न आये**

नजर फिराता हूँ श्याम नजर न आये

कैसा गिनौना हूँ **श्याम ओझल जाये**

कैसा डरावना हूँ श्याम दूर जाये

अधर से पुकारता हूँ **श्याम न मेरी सुने**

अधर से जपता हूँ श्याम न मेरी सुने

कैसा भ्रष्ट हूँ **श्याम डर जाये**

कैसा भिक्षुक हूँ श्याम हार जाये

तन तड़पाता हूँ **श्याम सहारे न आये**

तन तरसाता हूँ श्याम सहारे न आये

कैसा पवित्र हूँ **श्याम छुपता जाये**

कैसा विश्वसनीय हूँ श्याम लज्जाता जाये

मन से स्मरणता हूँ **श्याम निकट न आये**

मन से ध्यानता हूँ श्याम निकट न आये

कैसा अगम्य हूँ **श्याम शरमाता जाये**

कैसा निम्न हूँ श्याम दर्दता जाये

ओहह जगत वासी!

ओहह मन वासी!

ओहह तन वासी!

ओहह धन वासी!

ओहह नर्क वासी!

कैसे मैं रहूँ? कैसे क्या करूँ?

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम

"Vibrant Pushti"

हे इश्क!   क्या है तु? क्यूँ   है तु?

तेरे एक साँस से दिल **पंकज हो जाता है**

तेरे एक अश्क से धडकन **पूजा हो जाती है**

तेरे एक स्पर्श से आत्म **ज्योत हो जाती है**

तेरी एक नजर से नयन **शरण हो जाता है**

तेरी एक सोच से मन **पागल हो जाता है**

तेरी एक गूँज से रोम **स्पंदन हो जाता है**

सच मैं ऐसा साँवला हो गया हूँ

हर तरह से हर द्वार भटक रहा हूँ

"Vibrant Pushti"

हे मोहब्बत की कसम

मोहब्बत की कसम

हे प्यार की कसम

प्यार की कसम

हे उल्फत की कसम

उल्फत की कसम

हे इश्क की कसम

इश्क की कसम

हे प्रीत की कसम

प्रीत की कसम

हे तेरी ही कसम

मेरी ही कसम

"Vibrant Pushti"

दिल जुडते है

प्रीत प्रकट होती है

प्रीत से आत्मा प्रकाशित होता है

आत्मा में परमात्मा बिराजते है

हम हमारा जीवन का उजाला बिखरते है

उजाला से अंधकार नष्ट होता है

तन मन धन का अंधकार हट कर केवल प्रीत की यमुना ही बहती है

"Vibrant Pushti"

शाम को श्याम समझले

मयूर को श्याम समझले

कोयल को श्याम समझले

अमावस्या को श्याम समझले

काजल को श्याम समझले

जुल्फों को श्याम समझले

यही है श्याम श्याम से है श्याम

श्याम से ही साँसे

श्याम से ही प्यासे

श्याम चरण से ही श्याम

श्याम शरण से ही श्याम

यही है प्रीत श्याम की

यही है रीत श्याम की

जो श्याम का वह है श्याम का

श्याम श्याम से श्याम

श्याम से जन्मे श्याम से मिलने

श्याम श्याम से जग में होय

रीत निराली है जीवन की

जो जन्म जन्म श्याम संग होय

"Vibrant Pushti"

करे एहतराम प्रीत की
जो सदा निकट रहे
आज खेलों मेरी नयनों से
आज खींचो मेरे तन को
अपने तिरछे नजरों की चितवन से

मैं तुम्हारी हूँ
तुम मेरे रोम रोम में अपनी प्रीत भर दो

दिया है दर्शन मुझे
तुम अपने रंग रंग में रंगदो

हे कान्हा!

तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो श्यामा हो
ओ न्यारी
मुझे तुमसा रंग न कोई भाये
ओ प्यारे
तुम तो श्याम हो

तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा
तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा
तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला
तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा
हटो जाओ
ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो साँवली हो
ओ न्यारी
इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना
जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना
कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर
(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)

हटो जाओ
ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करने
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो प्रीत हो
ओ न्यारी
इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो
कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को
हटो जाओ
ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो बावरी हो
ओ न्यारी
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो श्यामा हो
ओ न्यारी
मुझे तुमसा रंग न कोई भाये
ओ प्यारे
मुझे तुमसा संग न कोई भाये
ओ न्यारी
तुम तो श्याम हो
तुम तो श्यामा हो
तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा
तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा
तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला
तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा
हटो जाओ
ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो साँवली हो
ओ न्यारी
इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना

जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना
कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर
(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)
हटो जाओ
ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करना
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो प्रीत हो
ओ न्यारी
इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो
कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को
घट घट तरसना ऐसे पल पल बरसना तुझसे
साँसों की साँस लडी है हर जनम जनम से
हटो जाओ
ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ
तुम तो श्याम हो
ओ प्यारे
तुम तो बावरी हो
ओ न्यारी
"Vibrant Pushti"

हे गोपाल नंदलाल
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु
तेरे नाम है कहीं हजार
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु

एक है तेरा नाम है श्याम सुंदर
श्यामा श्याम रंग लगाये
तन श्याम हो मन श्याम हो
सारा आत्म श्याम रंग चडाये
सारा आत्म श्याम रंग चडाये
हे गोपाल नंदलाल
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु
तेरा नाम है कहीं हजार
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु

ऐक है तेरा नाम है मोहन
मुझे तेरा मोह जताये
मन मोहना साँस मोहनी
जनम जनम तेरी ओर खींचाये
जनम जनम तेरी ओर खींचाये
हे गोपाल नंदलाल
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु
तेरा नाम है कहीं हजार
कैसे कैसे तेरा नाम स्मरु
"Vibrant Pushti"

शाम का वादा श्याम का

श्याम चुनरिया ओढ कर

शाम की बेला श्याम ढांक निकुंज पर

मिलने का वादा श्याम से

ढलती शाम से श्याम नैन ढूँढे

श्याम श्याम ओ श्याम

शाम की बेला श्याम बिन अधुरी

आजा श्याम शाम नहीं बिते

प्रीत मेरी शाम शाम तरसे

कजरारे नैन श्याम राह बरसे

श्याम से ही शाम मिलन रस रससे

"Vibrant Pushti"

रंग काला अंग काला

काला मेरा सजन

घुंघराले काले घने जुल्फों से लिपटे

काले अंग से खिली काली प्रीत आँचलीया

ऐसी ओढाऊँ कलकी लहर चुनरिया

कजरारे काले नयन से छूटे तिरछी नजरिया

मेरे तन मन बसे काले घने घनश्याम

आजा साँवरिया आजा सखियाँ

खेले रंग रंग प्रीत होली

नींद नहीं आती पिया तेरे ख्याल में

सारी बातें करते रहते है पलकें नैनन से

क्या करें क्या कहें कहाँ कहाँ खोये नजर से

हे श्याम! हे साँवरे!

काजल बह गया काली काली रात में

कैसे कैसे ढूँढे सहारा तेरे प्यार में

"Vibrant Pushti"

कैसा रंग से रंगाऊँ तुम्हें
हर रंग में है हर एक रंग
मेरा रंग उनका रंग
उनका रंग किसीका रंग
हर रंग में है हर एक रंग
लाल रंग हरा रंग
पीला रंग नीला रंग
तु है हर रंग का एक रंग
कोई तुझे काला कहें
कोई तुझे साँवला कहें
हर रंग में है हर एक रंग
कोई तुझे श्याम कहें
कोई तुझे घनश्याम कहें
कैसे कैसे भाव रंग से पुकारें
तु है हर रंग का एक रंग
मेरा श्याम सलोना साँवरिया
तेरे ही रंग से सदा रंगाऊँ
मैं हूँ तेरे ही रंग की साँवली
हर पल होली हर पल रसिया
तेरे ही रंग से तेरे ही रंग से खेलुँ
ओ साँवरिया! तुझमें ही समा जाऊँ

"Vibrant Pushti"

होली के दिन जोरा जोरी के दिन

कोई यूँ खींचे कोई यूँ खींचे

खींचे एक दूजे की ओर

जो खींचे प्रीत के रंग से

जो खींचे पवित्र आँचल से

बसे उनके नैन में काजल हो कर

सजे उनके तन पर शृंगार हो कर

न उतरे रंग उल्फत का

न छूटे रंग आत्म का

एक बार जो छू गया

बस गया जो बस गया

"Vibrant Pushti"

रंग रंग रंग रंग रंग रंग रंग

रंग दे ओ मुझे रंग दे कान्हा मुझे रंग दे

ऐसी रंग दे की फिर मैं न संसार की हो

ऐसी रंग दे की फिर मैं न जगत की हो

कान्हा! मैं सिर्फ तेरी और तु मेरा

रंग दे मुझे रंग दे, रंग दे हे कान्हा!

जन्मों जन्म से तु ही मेरा साँवरा

साँसों साँस से मैं ही तेरी बावरी

न कभी दूर तुझ से न कभी दूर मुझ से

ऐसी है अपनी प्रीत ऐसी है हमरी रंगीनी

श्याम पिया मोरी ऐसी है जीवनीयाँ

"Vibrant Pushti"

"बिना रंगा के मैं तो घर नहीं जाऊँगी"

"बीत ही जाये मोरि सारी ऊँमरीया"

हे कान्हा!

जन्म पाया है तुम से रंग ने

जीवन पाया है तेरे रंग से रंग ने

लाल न रंगाऊँ मैं

हरा न रंगाऊँ मैं

रंगाऊँ साँवरे साँवले रंग में

रंगाऊँ प्यारे प्रीत के रंग में

श्याम पिया मोरि रंग दे चुनरियाँ

कृष्णा रंगाऊँ मैं

श्यामा रंगाऊँ मैं

राधा हो कर कृष्ण रंग में रंग दे

यमुना हो कर श्याम रंग में रंग दे

श्याम पिया मोरि रंग दे नजरियाँ

रंग दे कान्हा

रंग दे गिरधारी

रंग दे गोपाल

रंग दे मुरारी

श्याम पिया मोरि रंग दे अधरियाँ

श्याम पिया मोरि बांध दे पायलियाँ

रंग दे साँवरिया!

रंग दे कन्हाई!

तेरे ही रंग में रंग दे प्रियतम

तेरे ही रंग में रंग दे प्रीत रंग

श्याम पिया मोरि रंग दे विरह बूँद

"Vibrant Pushti"

रंग दे रंग दे हे कान्हा! मुझे रंग दे
तेरी रीत से **तेरी प्रीत से**
तेरी रीत से **तेरी प्रीत से**
मुझे रंगाना है केवल **तेरी अदा से**
क्यूँकि!
क्यूँकि!
तेरी अदा में है मेरे जीवन की रीत
हे कान्हा! मुझे रंग दे
रंग दे रंग दे हे कान्हा! **मुझे रंग दे**

तेरी आंखमिचौली से **तेरी बाँसुरीयाँ से**
तेरी आंखमिचौली से **तेरी बाँसुरीयाँ से**
मुझे लुटाना है केवल **तेरा तन मन जीवन से**
क्यूँकि!
क्यूँकि!
तेरी प्रीत में है मेरे जन्मोजन्म के गीत
हे कान्हा! मुझे रंग दे
रंग दे रंग दे हे कान्हा! **मुझे रंग दे**
ओ मुझे रंग दे! ओ **मुझे रंग दे!**
"Vibrant Pushti"

हे साँवरिया!
तु न आया
ओहहह! तु न आया
होने लगी शाम रे
साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे
पिया! तकती रही निगाहें तेरी राह में
पिया! अपलक रही पलकें तेरी चाह में
दीप जलने लगे
ओहहह! दीप जलने लगे
मेरी आह में
साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे
तु न आया
ओहहह! तु न आया
होने लगी शाम रे
साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे
कैसे कैसे नजरों से छुपाती फिरुँ
कैसे कैसे ख्यालों से भगाती फिरुँ
दिल तडपने लगा
ओहहह! दिल तडपने लगा
तेरे मिलन में
साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे
तु न आया
ओहहह! तु न आया
होने लगी शाम रे
साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे
हे साँवरिया!
घडी घडी तरसे तेरे इंतजार की
बूँद बरसे बरसे तेरे विरह की
मुखडा प्रीत का दिखा
ओहहह! मुखडा प्रीत का दिखा
तेरे इशारे की

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

तु न आया

ओहहह! तु न आया

होने लगी शाम रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

हे साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग डाल

हे कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग डाल

श्याम गोविंद गोविंद श्यामा कर डाल

श्यामा गोविंद गोविंद कृष्ण कर डाल

हे श्याम गोविंद गोविंद श्यामा कर डाल

श्यामा गोविंद गोविंद कृष्ण कर डाल

कान्हा गोविंद गोविंद आजा बरसाना एक बार

खेल होली खेल मुझे तेरो रंग उडार

हे कान्हा गोविंद गोविंद आजा बरसाना एक बार

खेल होली खेल मुझे तेरो रंग उडार

कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग डाल

हे कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग डाल

साँवरे श्याम श्याम मिलले व्रज एक बार

राधा तडपे प्रीत विरह में बार बार

हे साँवरे श्याम श्याम मिलले व्रज एक बार

राधा तडपे प्रीत विरह में बार बार

राधा राधा राधा राधा राधा राधा

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

राधा राधा राधा राधा राधा राधा

कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

"Vibrant Pushti"

गोविंद गोपाल गिरिधर गोवर्धन गिरिराज

कृष्ण कन्हैया केशव कान्हा

मोहन मधुसुदन माधव

राधे

हे ज्योत!

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या होता हूँ?

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या पाता हूँ?

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या लुटाता हूँ?

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या खोता हूँ?

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या छोडता हूँ?

तुमसे प्रीत करके मैं क्या क्या जोडता हूँ?

अरि ओ!

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या होती हो?

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या पाती हो?

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या लुटाती हो?

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या खोती हो?

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या छोडती हो?

तुम भी मेरी प्रीत से क्या क्या जोडती हो?

ओहहह! कैसी है यह प्रीत

जो तुम मैं क्या क्या होते है?

जो तुम मैं क्या क्या पाते है?

जो तुम मैं क्या क्या लुटाते है?

जो तुम मैं क्या क्या खोते है?

जो तुम मैं क्या क्या छोडते है?

जो तुम मैं क्या क्या जोडते है?

सच मेरी साँवरि!

सच मेरे साँवरे!

हम क्या क्या होते है।

हम क्या क्या पाते है।

हम क्या क्या लुटाते है।

हम क्या क्या खोते है।

हम क्या क्या छोडते है।

हम क्या क्या जोडते है।

तभी तो तुम राधा - तभी तो मैं कृष्ण

तभी तो तुम श्यामा - तभी तो मैं श्याम

तभी तो तुम गोपि - तभी तो मैं गोप

तभी तो तुम पुष्टि - तभी तो मैं वल्लभ

तभी तो तुम अष्टसखा - तभी तो मैं श्री नाथ

तभी तो तुम वृंदावन - तभी तो मैं गोकुल

तभी तो तुम रंग यमुना - तभी तो मैं व्रज रज गोवर्धन

"Vibrant Pushti"

कभी छू लो उसी तरंग को

कभी छू लो उसी रंग को

कभी छू लो उसी रज को

कभी छू लो उसी बूँद को

कभी छू लो उसे **दंडवत कर के**

कभी छू लो उसे **दर्शन कर के**

कभी छू लो उसे **मनोरथ कर के**

कभी छू लो उसे **उत्सव कर के**

कभी छू लो उसे **कीर्तन कर के**

कभी छू लो उसे **सेवा कर के**

कभी छू लो उसे **याद कर के**

कभी छू लो उसे **विरह कर के**

कभी छू लो उसे **प्रीत कर के**

कभी छू लो उसे **खुद तडप के**

होगा मिलन पल पल भर के

होगा एकात्म जनम जनम के

है व्रज जो हर रीत से छू ले

प्रकट भये आनंद साथ दौडे परमानंद

"Vibrant Pushti"

कौन है कृष्ण?

कृष्ण से कैसा प्यार!

राधा राधा क्यूँ करे?

कैसी है प्रीत की रसधार!

प्रीत जाननी है

या

प्रीत समझनी है

प्रीत करनी है

या

प्रीत पहचाननी है

प्रीत पा नी है

या

प्रीत लूटानी है

कहो

"Vibrant Pushti"

खुद को छूपाने पलक रचाई

खुद को बरसने आँसू बहाये

खुद को पीने अधर रस जगाये

खुद को गूँजने धडकन बजाई

खुद को बसाने दिल प्रकटाया

खुद को तरसने प्रीत घडाई

खुद को महकने साँस लहराई

ऐसी लीला है मेरे प्रियतम!

जो पल पल जीवन जन्माये

हे राधा!

हे श्यामा!

हे कान्हा!

हे साँवरा!

"Vibrant Pushti"

एक काला चित चुराने वाला

चोरी चोरी मेरी चुनरी चोरी गयो री

नैनन की काजल चुरा गयो

अधर की लाली चुरा गयो

मन की मचलता चुरा गयो

तन की तरलता चुरा गयो

क्या क्या छुपाऊँ कहाँ

नजर से लपकाऊँ कहाँ

चोरी चोरी चोर गयो रे

छुप छुप छुपी गयो रे

एक काला चित चुराने वाला

आँचल ओढू जुल्फें बिछाऊँ

पलकें झुकाऊँ अधर बिडाऊँ

चूडियाँ गंठाऊँ पायल बंधाऊँ

कुंडल ठहराऊँ कंगन चिपकाऊँ

कहीं कहीं से भी सूर जगाये रे

कहीं कहीं से भी नाच नचाये रे

एक काला चित चुराने वाला

कहाँ कहाँ से ढूँढे रे

कैसे कैसे रीत से लूटें रे

"Vibrant Pushti"

"गोपाष्टमी"

अष्ट गोपा अष्ट गोपी अष्ट सखा अष्ट सखी

अष्ट से अष्ट मिले पाये अष्ट सृष्टि

अष्ट द्रष्टि से प्रीत पाये अष्ट अष्टि

अष्ट रीत है कान्हा की

खेलें अष्ट निधि

हर निधि से हर प्रियतम

हो जाये परम पुष्टि

यही कृति है कान्हा की

जो खेलें गोपीयन गली

गोपाष्टमी की लीला न्यारी

गोप गोपाल की प्रीत निराली

"Vibrant Pushti"

निहारत निहारत श्याम को

मैं खुद श्याम हो भई!

कैसे अब इनका स्मरण करुँ

मैं कितनी बेवफा भई!

"Vibrant Pushti"

" राधा " "ओहह राधा "

चाँद देखा सभी पतिव्रता ने

पाया चँदा जैसा मुखडा

माना चाँद जैसा पति

समाना अंग अंग प्रीति

सदा बसे अमृत रस

खिले जीवन चाँदनी सह

प्रिये मेरे चाँद जैसा

मैं प्रिये की चाँदनी

साथ साथ जूड कर

भरे शीतलता घूँट घूँट कर

छूटे झंझाल तूटे संसार

प्रिये मेरे मैं प्रियतम की

जो रीत है श्यामा श्याम की

"Vibrant Pushti"

आज तो ....

चाँद मुस्कुरायेगा

चाँदनी अमृत होगी

जिसने छूया वह गोपी

गोपी ने जिसको छूआ वह कान्ह

छेडेंगी प्रीत रस की फूआर

बजेगी तान बंसरी की

गाजेगी रुनझुन पायल की

दूर हो वह दिल में बसेगा

पास हो वह रास रचेगा

ऐसी है श्यामा की प्रीत

"Vibrant Pushti"

ब्रह्मांड के हर रंग निराले

सूर्य से निराला - चंद्र से निराला - सागर से निराला - धरती से निराला - आकाश से निराला

पुकारते है श्याम आते है घनश्याम

कैसे रहे भक्त बीन वत्सल भगवान

श्याम श्याम नैना गाये

श्याम श्याम मुखडा गाये

सामने तस्वीर जागे श्याम

कैसे रहे भक्त बीन वत्सल भगवान

श्याम श्याम अधर गाये

श्याम श्याम रोम गाये

दौडे चले आयेंगे घनश्याम

कैसे रहे भक्त बीन वत्सल भगवान

श्याम श्याम मनडा गाये

श्याम श्याम तनडा गाये

आत्म में प्रकटे श्याम

कैसे रहे भक्त बीन वत्सल भगवान

"Vibrant Pushti"

श्याम की याद में **श्यामा श्याम हो भई**

श्यामा श्याम हो भई **श्यामा श्याम हो भई**

लटलटीयाँली घने काले जुल्फों से बाँधु

लकुटीलाल श्याम घन हो भये

काजल भरे नैन से निरखुं

प्रिये श्याम साँवरा हो भये

श्यामा श्याम हो भई **श्यामा श्याम हो भई**

अंग मुख यमुना जल से नहाऊँ

साँवरा रंग तन में बस भये

आँचल अंग आकाश का पहनाऊँ

रोम रोम घनश्याम हो भये

श्यामा श्याम हो भई **श्यामा श्याम हो भई**

तांबुल चुवत रस अधर से चिपकायो

प्रेम चिह्न प्रिये श्यामल हो भयो

खिल खिल प्रीत रस मधुर उभरायो

दीवानी दीवाना **श्याम श्यामा हो भई**

श्यामा श्याम हो भई **श्यामा श्याम हो भई**

श्याम की याद में **श्यामा श्याम हो भई**

श्यामा श्याम हो भई **श्यामा श्याम हो भई**

"Vibrant Pushti"

सच यह निगाहें कितनी सुहानी

नैनन में बसे श्याम को **श्याम करदे**

सच यह नयन कितने तिरछे

नजर से खिंचे गोपाल को **गोपि करदे**

सच यह आँखें कितनी कमल नयनी

पलकों के झुकाव पंकज को **कृष्ण करदे**

सच यह नैना कितने बावरे

बरसते विरह बूँद कान्हा को **राधा करदे**

"Vibrant Pushti"

मुझे मुझमें पहचानना है

कितना अदभुत है **यह ब्रह्मांड!**

कितनी अदभुत है **यह सृष्टि!**

कितना अदभुत है **यह जगत!**

कितनी अदभुत है **यह प्रकृति!**

कितना अदभुत है **यह संसार!**

कितनी अदभुत है **यह संस्कृति!**

कितना अदभुत है **यह धर्म!**

कितनी अदभुत है **यह धरती!**

कितना अदभुत है **यह आसमान!**

कितना अदभुत है **यह जन्म!**

कितनी अदभुत है **यह मृत्यु!**

कितना अदभुत है **यह नैन!**

कितनी अदभुत है **यह दृष्टि!**

कितना अदभुत है **यह मन!**

कितनी अदभुत है **यह मानसी!**

कितना अदभुत है **यह जीवन!**

कितनी अदभुत है **यह जीवन धारा!**

कितना अदभुत है **श्री कृष्ण!**

कितनी अदभुत है **श्री राधा!**

कितना अदभुत है **श्याम!**

कितनी अदभुत है **श्यामा!**

कितना अदभुत है **गोपाल!**

कितनी अदभुत है **गोपि!**

कितना अदभुत है **साँवरिया!**

कितनी अदभुत है **श्यामली!**

कितना अदभुत है **श्री वल्लभ!**

कितनी अदभुत है **श्री पुष्टि!**

कितना अदभुत है **गिरिराज!**

कितनी अदभुत है **यमुना!**

कितना अदभुत है **अष्टसखा!**

कितनी अदभुत है **भक्ति!**

कितना अदभुत है **शरण!**

कितनी अदभुत है **प्रीत!**

कितना अदभुत है **स्पंदन!**

कितनी अदभुत है मेरी............

"Vibrant Pushti"

"भजन"

स्मरण है प्रीत आत्मीय का
यादें है प्रीत अनुभूति की
विरह मिलन है प्रीत भाव की
पुकार है विशुद्ध प्रीत खोज की
चेष्टा है पवित्र प्रीत उत्तेजना की
क्रीडा है विश्वास प्रीत जगाने की
हे श्याम! तु मेरा है मैं तेरी
रीत है ऐसी नटखट न्यारी
मैं आऊँ यमुना के तीर
या
तु आये मेरे दिल आँगन धीर
मैं तुझसे पागल
तु मुझसे पागल
यही है विरह स्मरण के गीत

"Vibrant Pushti

श्यामा आन बसो **इन नयनन में**

मेरे अश्रु बरस रहे **तेरे शरणण में**

श्यामा आन बसो **इन धडकन में**

मेरी साँस तडप रही **तेरे चरणण में**

श्यामा आन बसो **इन जीवन में**

मेरी पल सरक रही **तेरे विरहन में**

श्यामा आन बसो **इन तनमन में**

मेरी नस नस जल रही **तेरी यादों में**

श्यामा आन बसो इन **आत्म में**

मेरी प्रीत तरस रही **तेरे मिलन में**

"Vibrant Pushti"

हे बादल! तु कहाँ से आया?

हे बादल! तु क्या बनके आया?

हे बादल! तु क्या करने आया?

हे बादल! तु किसका संदेश लाया?

हे बादल! तु कैसा रंग भर के आया?

हे बादल! तु कौनसा रुप हो कर आया?

हे बादल! तु कैसी रीत ले कर आया?

हे बादल! तु कौनसा सूर गाने आया?

हे बादल! तु क्या जगाने आया?

हे बादल! तु किसके इशारे आया?

हे बादल! तु क्या मिटाने आया?

हे बादल! तु ....

ओहहहहह!

"Vibrant Pushti"

बूँद भरे बादल जब छाये मेरे तन

रोम रोम खिले प्रीत मिलन में घनघोर

याद आयी धडकन जागी दौडी साँसे प्रिय ओर

पायल बाजी चूडियाँ खनकी गूँजा नथ कुंडल

आँचल उडाया ज़ुल्फों लहराये नचाया तन मन तरल

अंग अंग मचला फूल फूल महका रंग रंग बिखरता जाय

खिले सूरज से गगन

खिले सूरज से चमन

खिले सूरज से धरती

खिले प्रीत से प्रियतम

खिले चाँदनी से चकोर

खिले रिमझिम से मोर

श्याम श्यामा से रंगे खेलें प्रीत के तरंग

जागे प्रीत उमंग एक हो साँवरिया के संग

" Vibrant Pushti "

कैसा है यह नयन

जो क्या क्या करता रहता है!

नयन से तीर छूटे

नयन से नजर चुराये

नयन से इशारा करें

नयन से बातें कहे

नयन से मन में समाये

नयन से चोरी करे

नयन से नाच नचाये

नयन से आग लगाये

नयन से प्यार जताये

नयन से आँख मिचौली खेले

नयन से जादू दिखाये

नयन से नीर बरसाये

नयन से ज्योत जगाये

नयन से दिल मचलाये

नयन से सपने सजाये

नयन से समाधि संधाये

नयन से सूरज उगाये

नयन से चाँद खिलाये

नयन से गीत सुनाये

नयन से दर्द मिटाये

नयन से लूट चलाये

नयन से प्रीत बरसाये

नयन से अमृत पिलायें

नयन से प्यास बुझाये

नयन से आशीर्वाद पाये

नयन से दिशा दिखायें

नयन से एकरार जताये

नयन से विरह समझायें

नयन से मीत मिलाये

नयन से स्पर्श इजहारे

नयन से पहचान कराये

नयन से ....

"Vibrant Pushti"

है श्याम!

घनश्याम बादलों ने नैनों में काजल लगाया

शाम की लालीमा ने अधर पर गुलाबी बरसायी

सूरज चंदा ने कानों में कुंडल सजाया

धरती के पीले फूलों ने पीतांबर पहनाया

मयूर पंख ने शीर पर मुकुट सजाया

मेरी प्रीत के रंग ने तन मन को रंगाया

तु है अब मेरा साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

"राधा" र + अ + ध + अ = राधा

र - रस

र - रज

ध - धरण

रस रंग रूप धरण

रस रंग रूप रज नित्य नूतन धरण

रस रंग रूप रज तनुनवत्व धरण

रस रंग रूप प्रकट जुडत मन नयन तन

रस रंग रूप रज स्पर्श आत्म परम मिलन

रस रंग रूप रज घट घट परिवर्तन

रस रंग रूप रज प्रीत पंकज शरण

प्रकट कृष्ण प्रकट राधा प्रकट श्याम साँवरा

गोविंद गोपाल गिरिधर घनश्याम शामळा

मधुर जीवन मधुर जनम मधुर परमानंद

सर्वत्र मधुर क्षण मधुर साँस मधुर पूर्णानंद

"Vibrant Pushti"

नील गगन के घनश्याम

बूँद बूँद बरसते मेघश्याम

उखड़ उखड़ उडती रजश्याम

तडप तडप उठती विरहश्याम

चकोर नयन से करें इंतज़ार

विहवळ मन से करें पुकार

कब आओगें घनश्याम

अब न बरसे प्रीत की धार

जो करनी है तुम्हें मिलन बरसात

आ जाओ श्याम!

आ जाओ श्याम!

मेरे तन मन धन में बस जाओ घनश्याम!

"Vibrant Pushti"

"व्रज" क्या है ऐसा जो व्रज सुनते, व्रज पढ़ते, व्रज लिखते ही आंतर तन मन और आत्म को कुछ होता है?

हम हर बार अष्ट सखा चरित्रों पढ़ते रहते है, हम हर बार गिरिराज जी दर्शन करते रहते है, हम हर बार यमुना पान और यमुना जी आरती दर्शन करते रहते है, हम हर बार गोकुल की महाप्रभुजी की बैठक की लीला गाते रहते है पर कभी खुद के चिंतन में, खुद के जीवन में संस्कृत करते है?

ना! हमें तो फुर्सत ही कहां!

हमें तो घूमना आता है, जानने की समझ कहां!

हम तो वहां पहुँचे बस, सहेलाणीयों की तरह देख लिया, कुछ शुद्धता अशुद्धता कर ली, हो गई यात्रा!

वाह! हम ने व्यापार कर लिया जीवन से और जीवन देने वाले से, अब उनकी मर्जी।

व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज

कैसे जानेंगे, कैसे स्पर्श पायेंगे!

श्याम तेरे कितने जन्म?

"Vibrant Pushti"

" श्रीयमुने "

बहती अमृत विशुद्ध निर्मल धारा बन कर

बूँद बूँद आमूल परिवर्तन करे उत्तम तत्व प्रदान

तनुनवत्व तेजोमय रचे पामे परब्रह्म स्नेह

नमन धरु पुष्टि तन प्राण धरु धरु आत्म ज्योत

जीवन जीव संस्कृत स्तुति करु घट घट जागे ज्ञान

तन मन धन भाव जगाये करु भक्ति दान

हे यमुने!

बरस जनम जनम तक पाऊँ व्रज रज धाम

घडी घडी सिंचु प्रीत गुण ध्याऊँ कृष्ण रस पान

सखी वृंदावन सखी गोवर्धन सखी वल्लभ पुष्टि प्राण

"Vibrant Pushti"

"गोपि भाव" कैसे समझे?

क्या है यह भाव?

"गोपि भाव"

हमने कहीं बार सुने, कहीं बार पढे, कहीं बार देखा।

"गोपि भाव" में गोपि सदा तडपती - तरसती - विहवळ - निर्दोष और निर्मोह भाव से अपने प्रियतम को मिलने दौडती वह गोपि! सच है?

"गोपि भाव"

आत्मा का **माधुर्य है**

आत्मा का **सौंदर्य है**

आत्मा का **पौरुष्य है**

आत्मा की **विनम्रता है**

आत्मा की **शांतता है**

आत्मा का **शृंगार है**

आत्मा का **काव्य है**

आत्मा की **सुसृष्टि है**

आत्मा का **संगीत है**

आत्मा की **महक है**

आत्मा का **ऐश्वर्य है**

आत्मा की **उर्मि है**

आत्मा की **उर्जा है**

आत्मा की **विशुद्धता है**

आत्मा की **सुस्मिता है**

आत्मा का **हास्य है**

आत्मा का **कारुण्य है**

आत्मा की **अभिन्नता है**

आत्मा की **सुविशेषता है**

आत्मा की **विरहता है**

आत्मा की **प्रीतता है**

आत्मा की **विविधता है**

आत्मा का **रुदन है**

आत्मा का **पुरुषार्थ है**

आत्मा की **निरंतरता है**

आत्मा की **निर्मलता है**

आत्मा की **तीव्रता है**

आत्मा का **वियोग है**

आत्मा का **विश्वास है**

आत्मा की **साँस है**

आत्मा की **सत्यता है**

आत्मा की **निर्दोषता है**

आत्मा की **शरणागति है**

आत्मा की **न्यौछावरता है**

आत्मा का नमन है

और तो......

सच कहे तो "गोपि भाव" समझ जाये तो हमारा प्रियतम हमसे दूर न हो।

"Vibrant Pushti"

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा, ओ कानजी हमारा

वनरावनना लोको सदा आनंद उत्सव करता

आनंद उत्सव थी कान्हा ने नचावता

थै थै नाची कान्हो हृदय कमलमां बिराजता

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा! ओ कानजी हमारा

वनरावनमां सदा बंसी नाद गूँजता

बंसी नादना सूर थी गोपि दिल हरखाता

हरखाता हृदयथी कान्हा कान्हा पुकारता

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा, ओ कानजी हमारा

वनरावनमां सदा माखण मिसरी आरोगता

दूध दधि उडाडता कान्हा ने खवडावता

खवडावी उडावी मन मटकी फोडावता

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा, ओ कानजी हमारा

वनरावनमां राधा कान्हाने सतावती

कान्हाने सतावती यमुना निकुंज मां संताती

छूपाछुपी खेल खेलता खेलता प्रीत डोर बांधता

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा, ओ कानजी हमारा

वनरावनमां गिरिराज भक्ति गीत गाता

भक्ति गीत गाता अष्टसखा बोलावता

अष्टसखा ने बोलावी कीर्तन धून गवडावता

वनरावन बोलावजो ओ कानजी हमारा, ओ कानजी हमारा

"Vibrant Pushti"

"हे श्यामलवर्णा"

श्यामलवर्णा - श्याम + ल + वर्णा

श्याम रंग श्याम तरंग श्याम रुप श्याम कर्म में डूबना

श्याम स्मरण श्याम तडपन श्याम स्फूरण श्याम विरह श्याम मिलन में झुरना

श्याम नजर श्याम साँस श्याम उच्छ्वास श्याम पुकार श्याम सुनना श्याम मनन श्याम चिंतन श्याम चितवन श्याम रोम रोम उगाना

श्याम धरती श्याम गगन श्याम धान्य श्याम सागर श्याम सूर्य श्याम चंद्र श्याम ब्रह्मांड श्याम सरिता श्याम फूल श्याम धूल श्याम रंग धारणो

श्याम से प्रीत

श्याम की रीत

श्याम के पथ अपनायो

श्याम पूजा

श्याम सूत्र

श्याम यज्ञ बसायो

श्याम + ल - लपटायो - लूटा - लूटाना

श्याम लपटायो

श्याम लूटयो

श्याम लूटायो

जो श्यामल सर्वत्र समायो

श्यामल वर्ण - श्यामल तन, श्यामल मन, श्यामल धन से श्याम से वरण कियो।

श्याम सुहागा

श्याम सुहाना

श्याम अंग **अंग निरखायो**

श्याम अंग **अंग बिखरायो**

श्याम अंग **अंग लहरायो**

श्याम अंग **अंग बसायो**

श्यामलवर्णा जतायो

"हे श्यामलवर्णा"

हे श्यामलवर्णा!

"Vibrant Pushti"

रैना जागी

जग जग कर जगा कर जागी

है ऐसा जो जगा कर जागी रैना

मन बैचेन तन अचेतन

साँस तरसे विरह बरसे

क्या है यह रैन

कौन है जो सोता है?

कौन है जो तरसता है?

कौन है जो तडपता है?

कौन है जो सिसकता है?

क्यूँ ऐसा जो कौन न जता जाय

क्यूँ ऐसा जो कौन न स्पर्शता जाय

क्यूँ ऐसा जो कौन न ढूँढता जाय

हे रैना! कौन कौन नही है यह रैना में

हे रैना! कौन कौन नही है यह रैन आँचल में

हे रैना! कौन कौन नही है यह रैन परछाई में

हे प्रिये श्याम! तेरे श्याम में डूबे श्याम

श्याम पुकारते हो भये श्याम

श्याम रटते हो गये श्याम

श्याम स्मरते हो गये श्याम

श्याम स्फूरते हो गये श्याम

श्याम स्पर्शते हो गये श्याम

श्याम श्याम से हो गये श्याम

यही निराली रैना

जो श्याम रंग से काली

यही काली से रैना हो गयी काली

काली श्याम से अंधेरी श्यामा भई

यही है श्यामा श्याम से रैना

जो श्याम हो कर है यह रैना

जो कभी मुझमें समाये

जो कभी श्याम में समाये

यही है भक्ति की रीत

यही है प्रीत की ज्योत

जो सदा जले यह रैन के आँगन

जो सदा जगाये यह रैन के जागरण

श्याम श्याम ओ श्याम

श्याम श्यामा श्याम

श्यामा श्यामा श्याम

श्याम श्याम श्याम

" Vibrant Pushti "

'रंग '

जन्म से मृत्यु पर्यंत

आत्म से परमात्मा एकात्म तक

रंग से हम जुडे ही है

यह ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें हर स्पर्श की पहचान कराये

ब्रह्मांड के कोई भी जीव

रंग से ही है

बिना रंग नही कोई ओर

चाहे बिते अनगिनत उमरियाँ

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी जरा जरैया**

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी हर नजरिया**

श्याम पीया सदा रंगे मेरी पथैया

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी अधरीया**

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी आँगनीया**

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी अटरीया**

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी चुनरिया**

श्याम पीया सदा **रंगे मेरी संवरीया**

हाँ! श्याम

श्याम श्याम के हर स्पंदनीया

इस लिए तु श्याम!

मेरा तत्व तत्व श्याम!

" Vibrant Pushti "

हर पल हर घडी हर क्षण

कहती रहे

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

यही थी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा कृष्ण की

कभी मिलते है कभी बिछडते है

कभी मिलते थे **कभी बिछडते थे**

कभी साथ रहते है कभी अलगते है

कभी साथ रहते **थे कभी अलगते थे**

कभी पास रहते है कभी दूर रहते है

कभी पास रहते थे **कभी दूर रहते थे**

पर

न कभी बिछडते है **न कभी बिछडते थे**

न कभी अलगते है **न कभी अलगते थे**

न कभी दूर रहते है **न कभी दूर रहते थे**

हाँ!

राधा बरसाना रहती है कान्हा नंदगांव

राधा वृंदावन रहती है कान्हा गोकुल

राधा गहरवन रहती है कान्हा मधुवन

राधा व्रज रहती है कान्हा द्वारका

पर

वह दोनों सदा

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

अर्थात

सदा एक हो कर जीते है

सदा एक हो कर मरते है

जीते है - **खुद में खुद की प्रीत बसा कर**

मरते है - **खुद में खुद को न्योछावर कर**

राधा - खुद

कृष्ण - खुद

खुद - **राधा**

खुद - **कृष्ण**

जो खुद खुद में बस जाये

जो खुद खुद से न्योछावर जाये

वह अमृत हो जाते है

जो सदा जीते है - न कभी मरते है

इसलिए

आज जीने की तमन्ना है

आज प्रीति का इरादा है

आज भी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा मुझमें है **कृष्ण मुझमें है**

कृष्ण मुझमें है **राधा मुझमें है**

राधा तुझमें है **कृष्ण तुझमें है**

कृष्ण तुझमें है राधा तुझमें है

राधा तुझमें है वह मुझमें है

कृष्ण तुझमें है वह मुझमें है

राधा मुझमें है वह तुझमें है

कृष्ण मुझमें है वह तुझमें है

यही ही है मधुर **प्रीत मिलन की पराकाष्ठा**

यही ही है मधुर **प्रेम एकात्म की श्रेष्ठता**

यही ही है मधुर **प्रेमात्म आत्मा की पवित्रता**

जो

सदा अमृत है

सदा प्रेमामृत है

सदा मधुरामृत है

" Vibrant Pushti "

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई बैर तुझसे

न कोई गैर तुझसे

प्रित करे तो रीत निभाये

फिरभी क्यूँ न चैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई मांग तुझसे

न कोई व्यंग तुझसे

नित नित याद करके चाहे

फिरभी क्यूँ न रैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

ऐसे पागल न करो श्याम

मुझसे दूर दूर न रहो श्याम

रीत सिखायी जो तुने हमें

खोये रहे पल पल तुममें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

" Vibrant Pushti "

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

आजा आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

तु न आये तेरी याद सताये

तु न पाये तेरी बिरह जताये

कैसी यह प्रीत जो चैन न आये

कैसी यह रीत जो शयन न आये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

यहां जहां साँवरे रंग निहालु

अंग अंग साँवरा संग मिलाऊ

कैसी यह गति जो ठहर न जाये

कैसी यह मति जो मुक्त न पाये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - श्यामा श्याम

सचित्र

सेवा सत्संग स्पर्श धारा
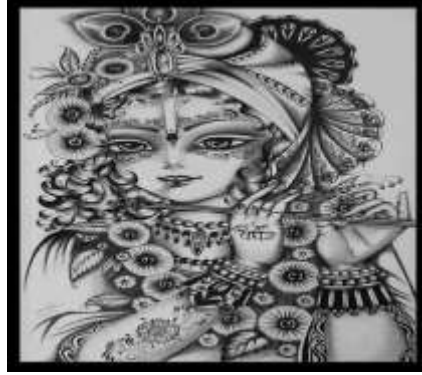
Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

प्रकाशक: "Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "